विषय-संस्कृत, बी०ए०स्नातक(प्रतिष्ठा) डॉ० ओम प्रकाश आर्य
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र महाराजा कॉलेज, आरा
कादम्बरी-शुकनासोपदेश दिनांक-30|07|20

गद्यांश व्याख्या

अहंकार दाह ज्वर मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः। अलीकाभिमानोन्माद कारीणि धनानि, राज्य विष विकार तन्द्रा प्रदा राजलक्ष्मीः।

सान्वयव्याख्या :- (अहंकार दाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः) अहंकार रूपी दाहक ज्वर से उत्पन्न मूर्च्छा (अचेतना) से अन्धकारयुक्त (अज्ञानयुक्त) राज स्वभाव निश्चय ही क्षुब्ध रहता है। (अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि) धन झूठे अभिमान और उन्मत्तता को उत्पन्न करने वाले होते हैं, (राज्यविष विकार तन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः) राज्यलक्ष्मी

राज्यरूपी विष के विकार से उत्पन्न तन्द्रा (मूर्च्छा) को देने वाली होती है।

<u>भावार्थ</u>- राजा लोग सुनते भी नहीं सुनते बल्कि गज-निमीलिका से हितैषी गुरुओं का तिरस्कार करते हैं। आखिर ऐसा होता क्यों है? इसका समाधान करते हैं कि जिस प्रकार दाहज्वर की मूर्च्छा से संज्ञाहीन हुआ मनुष्य छटपटाता है, उसी तरह अहंकाररूपी दाहज्वर से उत्पन्न मोह से अच्छे बुरे के विवेक को खो कर राजाओं का स्वभाव अत्यन्त अस्थिर हो जाता है। दाहज्वर की भाँति अहँकार भी मनुष्य के हृदय में तीव्र जलन पैदा करता है। दाहज्वर का दाह मनुष्य में मूर्च्छा उत्पन्न कर उसे संज्ञाहीन कर देता है। अहंकार की गर्मी भी अज्ञान के मोह को उत्पन्न कर मनुष्य को सदसद्विवेक से हीन कर देती है। स्वभाव की इस अस्थिरता में राजाओं का क्या दोष? धन का तो स्वभाव ही ऐसा है कि मिथ्याहँकार के द्वारा मनुष्य में उन्माद उत्पन्न करता है। उन्माद मानसिक रोग होने से दाहज्वर से भी एक दर्जा आगे है। न केवल धन ही अपितु यह राजलक्ष्मी भी राज्य के मद से उसी प्रकार प्रमाद व तन्द्रा उत्पन्न करती है जिसप्रकार विष मनुष्य को तन्द्रिल व निश्चेष्ट कर देता है। तो इस राजलक्ष्मी को 'विष' न कहें तो क्या कहें?

टिप्पणी- सुश्रुत में उन्माद का लक्षण इसप्रकार दिया गया है-

'मदयन्त्युद्धता दोषा यस्मादुन्मार्गमाश्रिताः।
मानसोऽयमतो व्याधिरुन्माद इति कीर्तितः॥ (6.62)

चरकसंहिता में बताया गया है कि बुद्धि विभ्रम होना,

मन का चंचल होना, नेत्रों का व्याकुल होना, धैर्य का नाश होना, वचनों असम्बद्ध होना और हृदय का शून्य होना - ये उन्माद के सामान्य लक्षण हैं (८-९)
अहंकारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता - अहंकार एव दाहज्वरः (क० धा०) अहंकारदाहज्वरेण मूर्च्छा (तृ० तत्पु०) तथा अन्धकारिता (तृ० तत्पु०), अन्धकारिता - अन्धकार एव आचरिता (क० धा०)। विह्वला - वि+ह्वल+अच्+टाप् = व्याकुल, पीड़ित, मतिभ्रष्ट, भयभीत।
हि - निश्चितम् । राज्यप्रकृतिः - राज्ञः प्रकृतिः (ष० तत्पु०)। अलीकाभिमानोन्मादकारीणि - अलीकः अभिमानः अलीकाभिमानः (क० धा०) अलीकाभिमान एव उन्मादः अलीकाभिमानोन्मादः (क० धा०) अथवा अलीकाभिमानेन उन्मादः (तृ० तत्पु०) तं कर्तुं शीलं येषां तानि (बहु०) वि० (न०)।
राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा - राज्यमेव विषं राज्यविषं (क० धा०) तस्मात् विकारः राज्यविषविकारः (पं० तत्पु०) राज्यविषविकारेण तन्द्रा (तृ० तत्पु०) तस्याः प्रदा टाप् (ष० तत्पु०)।
राजलक्ष्मीः - राज्ञः लक्ष्मीः (ष० तत्पु०)। इति।